श्री दुर्गा स्तुति

पहला अध्याय

दोहा :

वन्दो गौरी गणपति शंकर और हनुमान।
राम नाम प्रभाव से है सब का कल्याण।
गुरुदेव के चरणो की रज मस्तक पे लगाऊं।
शारदा माता की कृपा लेखनी का वर पाऊं।
नमो 'नारायण दास जी' विप्रन कुल श्रंगार।
पूज्य पिता की कृपा से उपजे शुद्ध विचार ।
वन्दू सनत समाज को वन्दू भगतन भेख ।
जिनकी संगत से हुए उलटे सीधे लेख ।
आदि शक्ति की वन्दना करके शीश नवाऊं ।
सप्तशति के पाठ की भाषा सरल बनाऊं ।
क्षमा करें विद्वान सब जान मुझे अन्जान ।
चरणो की रज चाहता बालक 'चमन' नादान ।

घर घर दुर्गा पाठ का हो जाये प्रचार ।
आदि शक्ति की भक्ति से होगा बेड़ा पार ।
कलियुग कपट कियो निज डेरा, कर्मो के वश कष्टघनेरा ।

चिन्ता अग्न में निस दिन जरही,
प्रभु का सिमरन कबहुं न करहीं
यह स्तुति लिखी तिनके कारण,
दु:ख नाशक और कष्ट निवारण

मारकंडे ऋषि करे बखाना,
संत सुनई लावे निज ध्याना ।
स्वारोचिप नामक मनवंतर में,
सुरथ नामी राजा जग भर में ।

राज करत जब पड़ी लड़ाई, युद्ध में मरी सभी कटकाई ।
राजा प्राण लिए तब भागा, राज कोष परिवार त्यागा ।
सचिवन बांटयों सभी खजाना, राजन मर्म यह बन में जाना ।
सुनी खबर अति भयो उदासा, राजपाठ से हुआ निराशा ।
भटकत आयो इकबन माहिं, मेधा मुनी के आश्रम जाहिं ।

मेधा मुनी के आश्रम था कल्याण निवास ।
रहने लगा सुरथ वहाँ बन संतन का दास ।
इक दिन आया राजा को अपने राज्य का ध्यान ।
चुपके आश्रम से निकल पुहुँचा बन में आन ।

मन में शोक अति उपजाये, निज नैन से नीर बहाये ।
पुरममता अति ही दुःख लागा, अपने आपको जान अभागा ।
मन में राजन करे विचारा, कर्मन वश पायो दुःख भारा ।
रहे न नौकर आज्ञाकारी, गई राजधनी भी सारीं ।
विधनामोहे भयो विपरीता, निश दिन रहूं विपन भयभीता ।
देव करोगे कबहु सहाई, काटो मोरि विपदा सिर आई ।
सोचत सोच रहयो भुहाला, आयो वैश्य एकतेहिं काला ।
तिनराजा को कीन प्रणामा, वैश्य समाधि कहयो निज नामा ।

दोहा :

राजा कहे समाधि से कारण दो बतलाये ।
दुखी हुए मन मलिन से क्यों इस वन में आए ।
आह भरी उस वैश्य ने बोला हो बेचैन ।
सुमरिन कर निज दःख का भर आये जलनैन ।

वैश्य कष्ट मन कह डाला, पुत्रों ने है घर से निकाला ।
छीन लियो धन सम्पति मेरी, मोरी जान विपद ने घेरीं ।
घर से धक्के खा वन आया, नरी ने भी दगा कमाया ।
सम्बन्धी स्वजन सब त्यागे, दुख पावेंगे जीव अभागे ।
फिर भी मन में धीर न आवे, ममतावश हर दम कल्पावे ।

दोहा :

मेरे रिश्तेदारों ने किया नीचों का काम ।
फिर भी उनके बिना न आये मुझे आराम ।
सुरथ ने कहा मेरा भी ख्याल ऐसा ।
तुम्हारा हुआ ममतावश हाल जैसा ।
चले दोनों दुखिया मुनि आश्रम आए ।
चरण सिर नवा कर वचन ये सुनाए ।
ऋषिराज कर कृपा बतलाइये गा ।
हमें भेद जीवन का समझाइये गा ।
जिन्होने हमारा निरादर किया है ।
हमें हर जगह ही बेआदर किया है ।
लिया छीन धन और सर्वस्व है जो ।
किया खाने तक से भी बेबस है जो ।
ये मन फिर भी क्यों उनको अपनाता है ।
उन्ही के लिये क्यों यह घबराता है ।
हमारा यह मोह तो छुड़ा दीजिये गा ।

हमें अपने चरणों लगा लीजिये गा ।

बिनती उनकी मान कर, मेधा ऋषि सुजान ।
उनके धीरज के लिए कहे यह आत्म ज्ञयान ।
यह मोह ममता अति दुखदाई, सदा रहे जीवों में समाई ।
पशु पक्षी नर देव गन्धर्वा, ममतावश पावे दुख सर्वा ।
गृह सम्भन्धी पुत्र और नारी, सब ने ममता झूठी डारी
यद्यपी झूठ मगर न छूटे, इसी के कारण कर्म हैं फूटे ।
ममतावश चिड़ी चोग चुगावे, भूखी रहे बच्चों को खिलावे ।
ममता ने बांधे सब प्राणी, ब्राहमण डोम ये राजा रानी ।
ममता ने जग को बैराया, हर प्राणी का ज्ञान भुलाया ।
ज्ञान बिना हर जीव दुःखारी, आये सर पे विपदा भारी ।
तुमको ज्ञान यथार्थ नाही, तभी तो दुख मनों मनमाही ।

दोहा :

पुत्र करे मां बाप को लाख बार धिक्कार ।
मात पिता छोड़े नहीं फिर भी झूठा प्यार ।
योग निन्द्रा इसी तो ममता का है नाम ।
जीवों को कर रखा है इसी ने बे आराम ।

भगवान विष्णु की शक्ती यह, भक्तों की खातिर भर्कति यह ।
महामाया नाम धराया है, भगवती का रूप बनाया है ।
ज्ञानियों के मन को हरती है, प्राणियों को बेबस करती है ।
यह शक्ति मन भरमाती है, यह ममता में फंसाती है ।
यह जिस पर कृपा करती है, उसके दुःखों को हरती है ।
जिसको देवी वरदान है यह, उसका करती कल्याण है यह ।
यही ही विद्या कहलाती है, अविद्या भी बन जाती है ।

संसार को तारने वाली है, यह ही दुर्गा महांकाली है ।
सम्पूर्ण जग की मालक है, यह कुल सृष्टि की पालक है ।

दोहा :

ऋषि से पूछा राजा ने कारण तो बतलाओ ।
भगवती की उतपत्ती का भेद हमें समझाओं ।
मुनि मेधा बोले सुनो ध्यान से ।
मग्न निद्रा में विष्णु भगवान थे ।
थे आराम से शेश शैय्या पे वो ।
असुर मधु कैटभ वहाँ प्रगटे थे दो ।
श्रवन मैल से प्रभु की लेकर जन्म ।
लगे ब्रहमा जी को वो करने खत्म ।
उन्हे देख ब्रहमा जी घबरा गये ।
लखी निद्रा प्रभु की तो चकरा गये ।
तभी मग्न मन ब्रहमा स्तुति करीं ।
कि इस योग निद्रा को त्यागो हरी ।
कहा शक्ति निद्रा तू बन भगवतीं ।
तू स्वाहा तू अम्बे तू सुख सम्पत्ति ।
तू सावित्री सन्धया विश्व आधार तू ।
है उत्पति पालन व संसार तू ।
तेरी रचना से ही यह संसार है ।
किसी ने न पाया तेरा पार है ।
गदा शंख चक् पदम हाथ ले ।
तू भक्तों का अपने सदा साथ दे ।

महामाया तब चरण ध्याऊं, तुमरी कृपा अभय पद पाऊं ।
ब्रहमा विष्णु शिव उपजाए, धारण विविध शरीर कर आए ।

तुमरी स्तुति की न जाए, कोई न पार तुम्हारा पाए ।
मधु कैटभ मोहे मारन आए, तुम बिन शक्ति कौन बचाए ।
प्रभु के नेत्र से हट जाओ, शेष शैय्या से इन्हें जगाओ ।
असुरों पर मोह ममता डालो, शर्णागत को देवी बचा लो ।
सुन स्तुति प्रगटी महामाया, प्रभु आंखो से निकली छाया ।
तामसी देवी नाम धराया, ब्रह्मा खातिर प्रभु जगाया ।

दोहा :

योग निद्रा के हटते ही प्रभु उघाड़े नैन ।
मधु कैटभ को देखकर बोले क्रोधित बैन ।
ब्रह्मा मेरा अंश है मार न सके कोय ।
मुझ से बल अजमाने को लड़ देखो तुम दोय ।
प्रभु गदा लेकर उठे करने दैत्य संघार ।
प्राक्रमी योद्धा लड़े वर्ष वो पांच हजार ।
तभी देवी महामाया ने दैत्यों के मन भरमाए ।
बलवानों के ह्रदय में दिया अभिमान जगाए ।
अभिमानी कहने लगे सुन विष्णु धर ध्यान ।
युद्ध से हम प्रसन्न हैं मांगो कुछ वरदान ।
प्रभु थे कौतक कर रहे बोलो इतना हों
मेरे हाथों से मरो वचन मुझे यह दों ।
वचन बध्य वह राक्षस जल को देख अपार ।
काल से बचने के लिए कहते शब्द उच्चार ।
जल ही जल चहूं ओर है ब्रह्मा कमल बिराज
मारना चाहते हो हमें तो सुनिए महाराज ।
वध कीजो उस जगह पे जल न जहां दिखायें ।
प्रभु ने इतना सुनते ही जांघ पे लिया लिटायें ।
चक्र सुदर्श से दिए दोनों के सिर काट
खुले नैन रहे दोनों के देखत प्रभु की बाट ।

ब्रह्मा जी की स्तुति सुन प्रगटी महामाय ।
पाठ पढ़े जो प्रेम से उसकी करे सहाय ।

शक्ति के प्रभाव का पहला ये अध्याय ।
'चमन' पाठ कारण लिखा सहजे शब्द बनाय ।
श्रद्धा भक्ति से करो शक्ति का गुणगान ।
ऋद्धि सिद्धि नव निधि दे करे दाती कल्याण ।